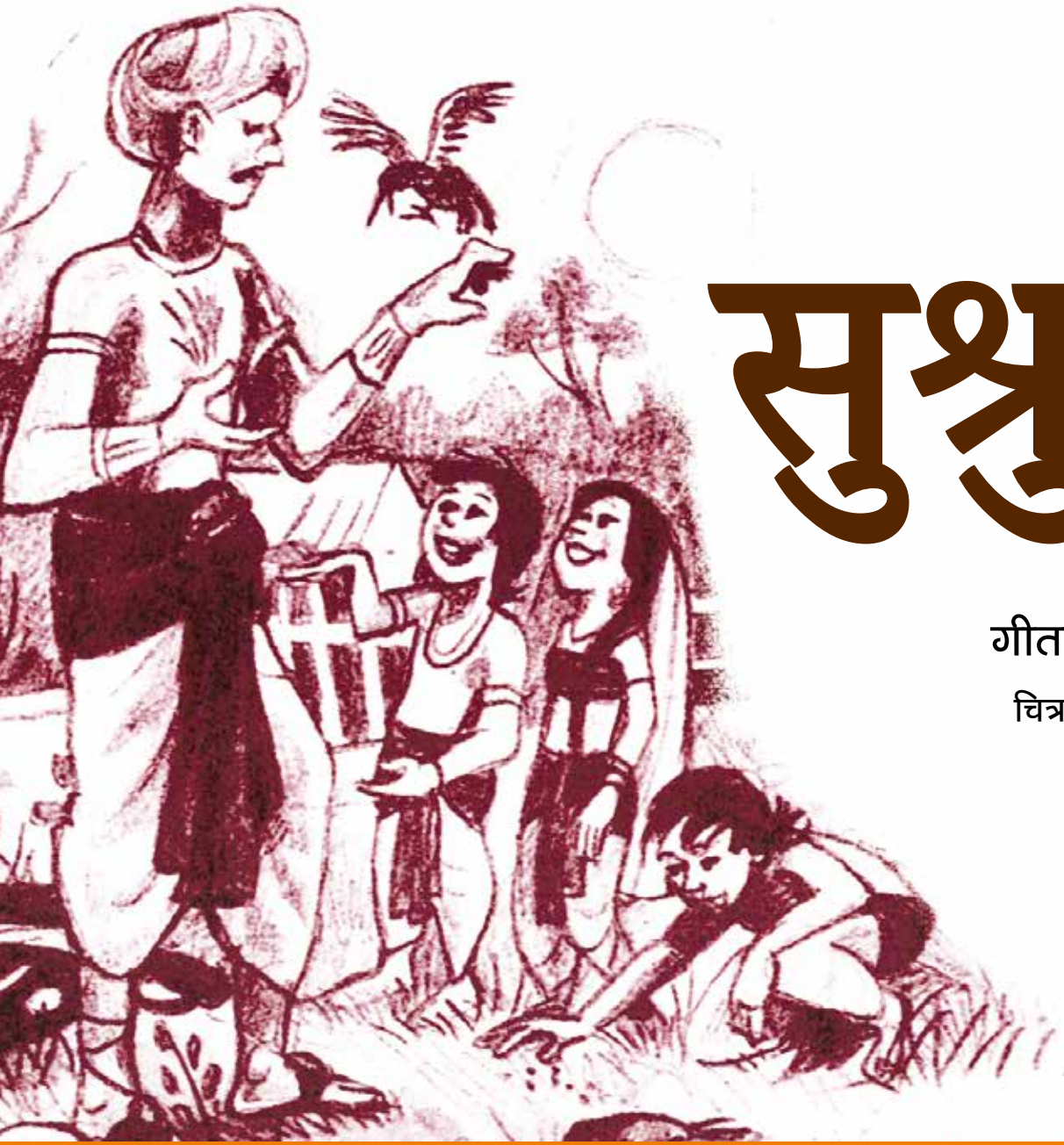

सुश्रुत

गीता धर्मराजन
चित्राँकनः सुमति

कथा की 300एम थिंकबुक

लगभग 2000 साल से भी पहले, भारत में एक विशेष डॉक्टर रहते थे, सुश्रुत। सुश्रुत एक प्लास्टिक सर्जन थे। यानि, अगर शरीर का कोई अंग - जैसे कि, किसी की नाक या कान - युद्ध में अथवा किसी दुर्घटना में कट जाए तो सुश्रुत उसे जोड़कर फिर से पहले जैसा कर सकते थे।

एक दिन एक सैनिक सुश्रुत के पास आया। 'मेरी नाक!' वह दर्द से कराहते हुए बोला, 'लड़ाई में दुश्मन के वार से मेरी नाक कट गयी। क्या नाक को जोड़कर आप फिर से पहले जैसी कर सकते हैं?'

'हाँ!' सुश्रुत ने कहा।

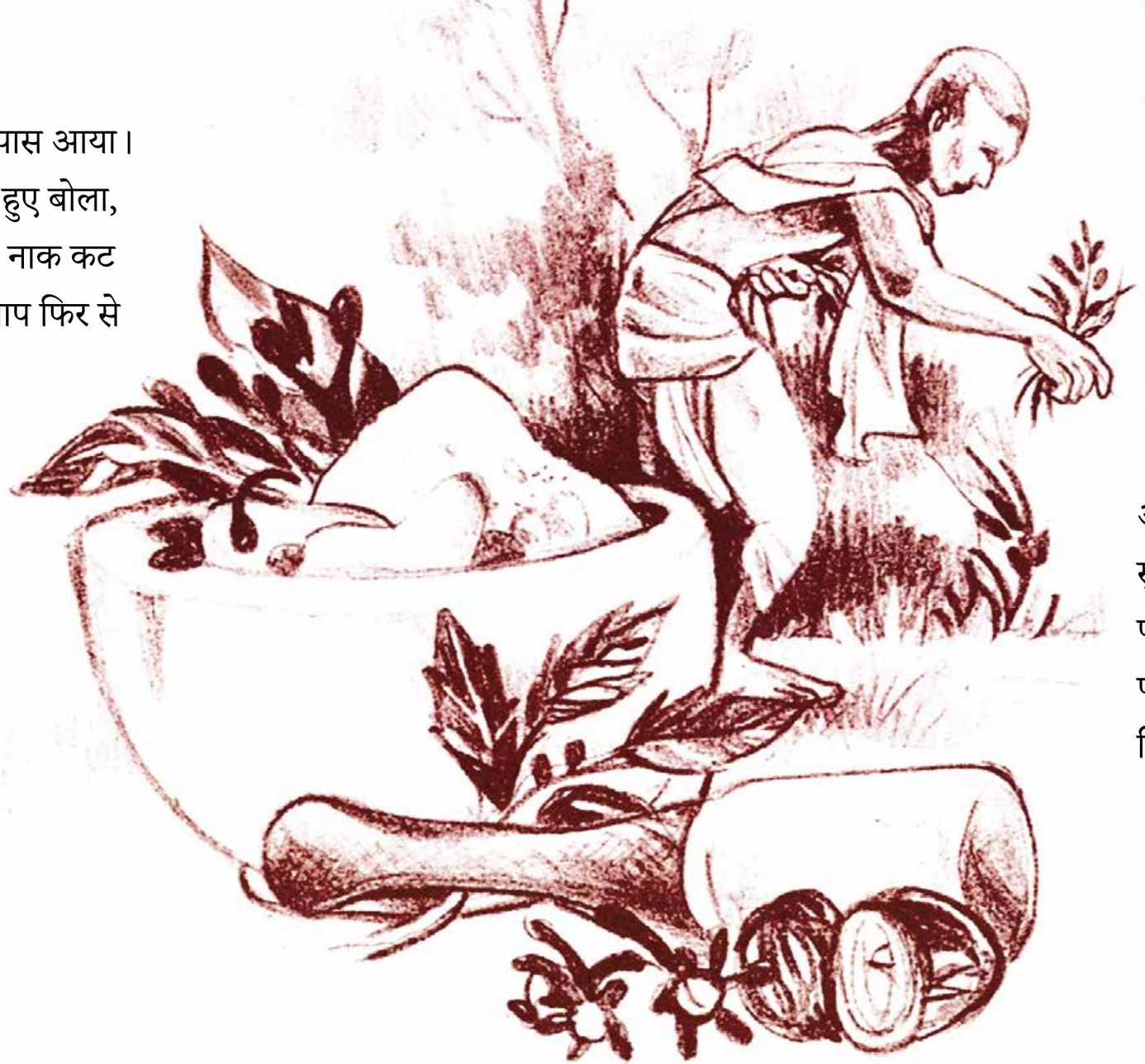

अगले दिन सुबह, नहा-धोकर, सुश्रुत जड़ी-बूटियाँ ढूंढने निकल पड़े। काफ़ी ढूंढने के बाद उन्हें वह पत्तियाँ मिलीं जो उन्हें ऑपरेशन के लिए चाहिए थीं।

अब शुरू हुआ ऑपरेशन ... तोते की चोंच जैसे एक यंत्र को सुश्रुत ने साढ़े हुए हाथ से पकड़ा। फिर उन्होंने एक साफ़-सुथरे, लंबे-चौड़े पत्ते को उठाया जो नाक के उस कटे हुए हिस्से को पूरी तरह से ढक सकता था। और उस पत्ते को चोट के ऊपर रख दिया।

फिर, उन्होंने सैनिक के गाल से चमड़ी का एक उतना ही बड़ा टुकड़ा काटा जो पत्ते को पूरी तरह से ढक सकता था। और फटाफट इस चमड़ी को नाक के ऊपर उल्टा दिया। फिर उन्होंने नथुनों में दो नलियाँ लगाईं जिससे सैनिक को सांस लेने में कोई असुविधा न हो।

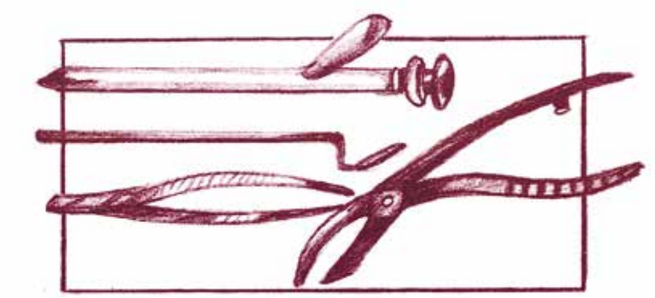

आखिर में, सुश्रुत ने ध्यान से नाक पर पट्टी बाँधी। उस पर पिसा हुआ रक्त-सन्दानम छिड़का और जड़ी-बूटियों का रस भी लगाया।

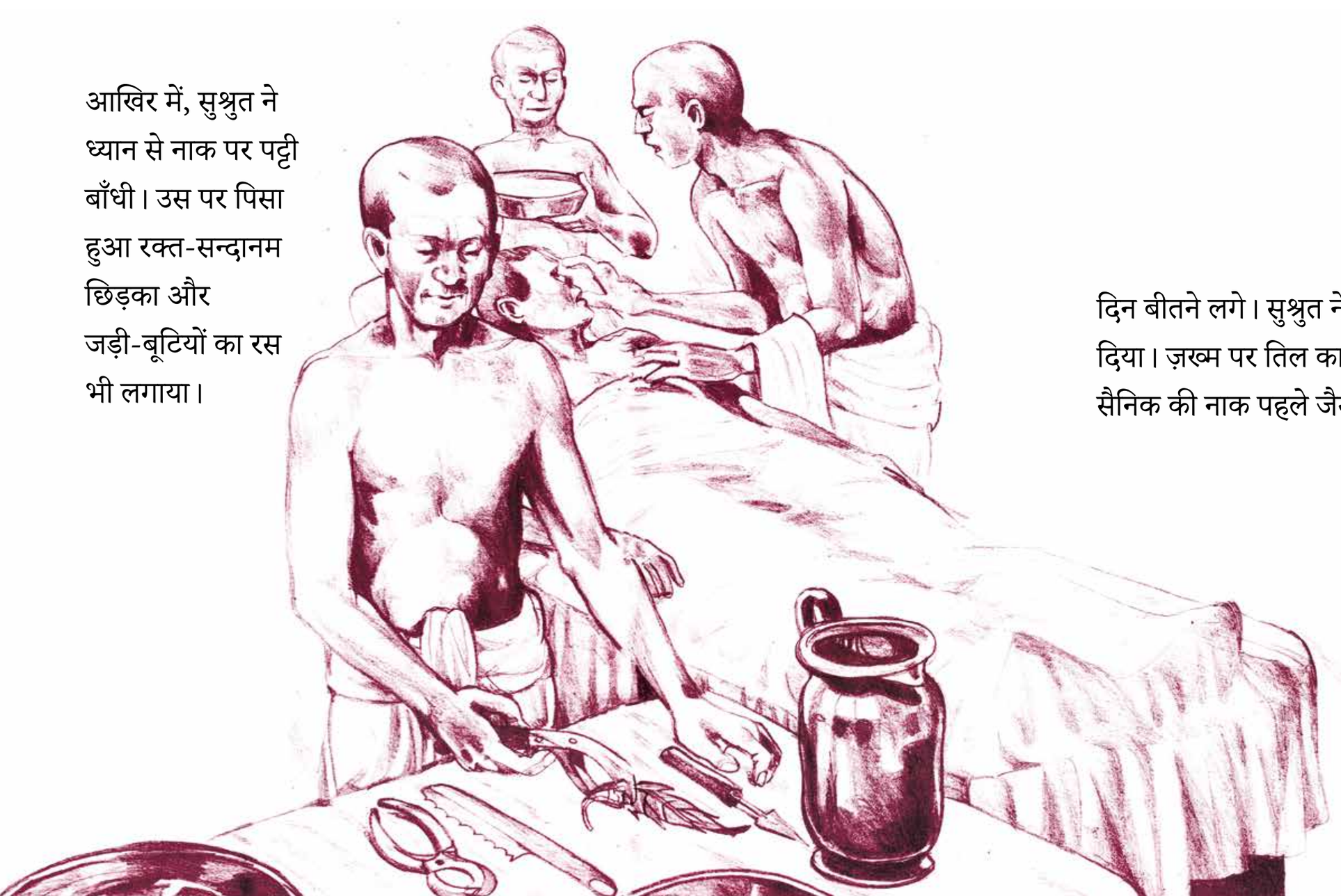

दिन बीतने लगे। सुश्रुत ने मरीज़ को पीने के लिए घी दिया। ज़ख्म पर तिल का तेल छिड़का। और शीघ्र ही सैनिक की नाक पहले जैसी हो गई!

और सैनिक नयी नाक पाकर बहुत सावधान हो गया था। उसे लगा कि अपने देश की रक्षा बिना युद्ध के भी की जा सकती है!

“किसी चीज़ को पाने के लिए युद्ध करना बहुत बड़ी बेवकूफ़ी है!” उसने अपने-आप से कहा और वापस स्कूल चला गया। वह भी डॉक्टर बनना चाहता था - सुश्रुत की तरह।

सुश्रुत एक विशेष डॉक्टर थे जो कटी हुई नाक को जोड़कर पहले जैसा बना सकते थे।

वे भारत में आज से 2000 साल से भी पहले रहते थे। सैनिक की नाक पर किये गए ऑपरेशन को प्लास्टिक सर्जरी कहते हैं।

सुश्रुत केवल कटी हुई नाक ही नहीं जोड़ते थे
बल्कि दूसरे, अन्य ऑपरेशन भी करते थे।

सुश्रुत से पहले भी भारत में उन्हीं की तरह के कई अन्य डॉक्टर थे। मनुष्य के शरीर के बारे में वे बहुत कुछ जानते थे। पर सुश्रुत पहले डॉक्टर थे जिन्होंने, भारतीय सर्जरी के बारे में जितना भी वे जानते थे, वह सब कुछ एक किताब में लिख दिया। इस किताब का नाम है "सुश्रुत संहिता।" 184 अध्याय वाली यह एक बहुत बड़ी किताब है।

सुश्रुत के कई सौ साल बाद अमेरिका और
इंग्लैंड के डॉक्टरों ने प्लास्टिक सर्जरी सीखी।

तुम और मैं, सुश्रुत जैसे महान व्यक्ति की
संतान हैं। हम क्या नहीं कर सकते - अगर
थोड़ी कोशिश करें तो!

गीता धर्मराजन को बेहद पसंद है लिखना, विशेष रूप से बच्चों के लिए। इन्हें 2012 में साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए पद्म श्री से सम्मानित किया गया था।

सुमति एक ऐसी चित्रकार हैं जो सपनों को अपनी चित्रकारी के माध्यम से जीवित कर देती हैं। उन्होंने बच्चों की कई किताबों में चित्रकारी की है।

क कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" – **नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" – **पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" – **टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– **चार्ल्स लैंड्री,** ***द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***

हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा 1993, 2021
मौलिक लेखन कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
चित्राँकन कृति स्वामित्व © कथा
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़े।

कथा एक पंजीकृत आलंमकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है।

यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं इसकी ओरेंज श्रृंखला में

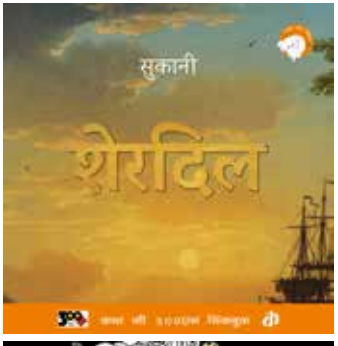

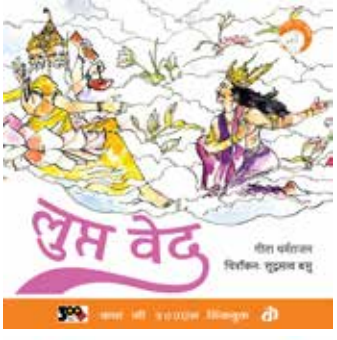

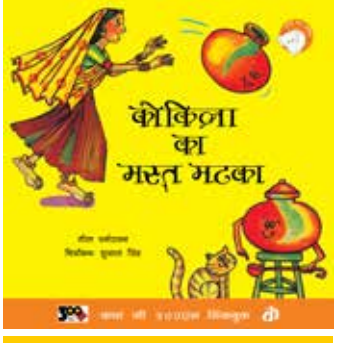

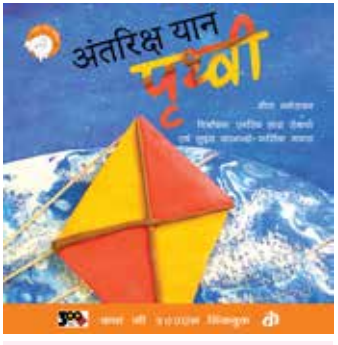

FOR OUR BOOKS

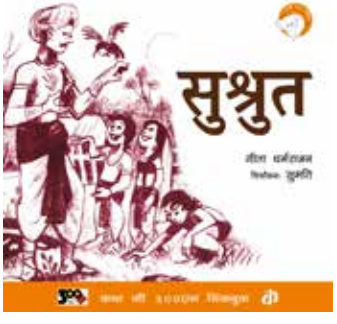

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children
a katha book
ISBN 978-93-88284-81-3
www.katha.org
₹ xxx

आनंद और समझने के लिए पढ़ो